

**निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों का उत्तर दें :**

पेंसिल की कहानी बहुत पुरानी नहीं है। करीब छः सौ वर्ष पहले जर्मनी में ग्रेफाइट की चट्टानें मिली। इनका कोई टुकड़ा लेकर कागज या पत्थर पर लिखा जाता, तो निशान या लकीरे बन जाती। इसके कोई डेढ़ सौ साल बाद इंग्लैंड में शुद्ध ग्रेफाइट की चट्टान मिली। पहले गड़रियो को इनका पता चला। वे ग्रेफाइट की चट्टान का टुकड़ा लेकर अपनी भेड़ों पर निशान लगा देते। इससे उन भेड़ों की अलग से पहचान हो जाती थी।

फ्रांस के निकोलस जेटकांते और ऑस्ट्रेलिया के जोसफ हडथरमुथ ने सबसे पहले पेंसिल बनाने में कामयाबी हांसिल की। अब तो इतनी सुन्दर पेंसिल बनती है कि बच्चे उन्हें पाने के लिए मचल उठते हैं। अब पेंसिल पर सुन्दर सुन्दर बच्चों के हसते खेलते चित्र होते हैं। कुछ पर पक्षियों और जानवरों के भी चित्र होते हैं। वे इतनी रंग बिरंगी होती हैं कि उन्हें हाथ में लिए बगैर चैन ही नहीं पड़ता।

1. करीब छः सौ वर्ष पहले जर्मनी में किसकी चट्टानें मिली?
2. ग्रेफाइट के टुकड़े से कागज या पत्थर पर लिखने से क्या बन जाता है?
3. ग्रेफाइट की शुद्ध चट्टानें सबसे पहले कहाँ मिली?
4. गड़रिये ग्रेफाइट से क्या करते थे?
5. सबसे पहले पेंसिल बनाने में किसने कामयाबी हांसिल की?